Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

SA–201

B.A. (Part–III) DUE of B.A. Part–II Suppl. Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

1. (i) केशव की संवाद-योजना पर प्रकाश डालिए।

   (ii) बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है, स्पष्ट कीजिए।

(iii) सेनापति के काव्य में ऋतु वर्णन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

(iv) सिद्ध कीजिए कि भूषण वीर और ओज के कवि हैं।

(v) घनानन्द के काव्य में विरह की प्रधानता है, सिद्ध कीजिए।

(vi) कवि रज्जब ने गुरु की महत्ता का प्रतिपादन किस प्रकार किया है ?

(vii) 'रीतिमुक्त' काव्य की विशेषताएँ बताइये।

(viii) 'रीतिसिद्ध' काव्यधारा का परिचय दीजिए।

(ix) सवैया छन्द के लक्षण और उदाहरण लिखिए।

(x) दोहा छन्द के लक्षण और उदाहरण बताइये।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

नोट :– निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

2. बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल,
कठिन कराल त्यों अकारू दीह दुख को
विपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम,
पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुख को।
दूरि कै कलक-अङ्क भव-सीस-ससि सम,
राखत है कैसोदास दास के वपुख को
साँकरे की साँकरन सनमुख होत तौरै,
दशमुख मुख जोवैं गजमुख-मुख को॥

3. अधर धरत हरि कैं परत, ओरु दीठि पट ज्योति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्र धनुष रँग होति॥
नेह न नैननि को कछू, उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय॥
दृग उलझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई नई यह रीति॥
कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय॥

4. कोऊ कहौ कुलटा, कुलीन, अकुलीन कहौ,

कोऊ कहौ रंकनि कलंकिनि, कुनारी हौं।

कैसो परलोक, नरलोक, बर लोकन मैं,

लीन्हों मैं अलोक लोक लकिन ते न्यारी हौं॥

तन जाहि, मन जाहि, देव गुरु जन जाहि

जीव क्यों न जाहि, टेक टरति न टारी हों।

वृन्दाबनबारी बनवारी के मुकुट पर,

पीटपटवारी वहि मूरति पै वारी हौं॥

5. राम को नाम जपो निसि-बासर, राम ही को इक आसरो भारो।

भूलो न भूल की भीरन में, 'पद्माकर' चाहि चितौनि को चारो॥

ज्यों जल में जलजात के पात, रहै जग में त्यों जहान तें न्यारो।

आपने-सो सुख औ दुख दौरि जु और को देखै सु देखन हारो॥

6. बरन-बरन तरु फूले उपवन-बन,

सोई चतुरंग संग दल लहियतु है।

बन्दी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,

गुञ्जत मधुप गान गुन गहियतु है॥

आवै आस-पास पुहुपन की सुबास, सोई,

सोंधे के सुगन्ध माँझ सने रहियतु है।

सोभा को समाजु, सेनापति, सुख-साजु आजु,

आवत बसन्त रितु-राजु कहियतु है॥

7. भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी,

याही दुख हमैं जक लागी हाय हाय है।

तुम तौ निपट निरदई गई भूलि सुधि,

हमैं सूल-सेलनि सो क्यों हू न भुलाय है॥

मीठे-मीठे बोल बोलि, ठगी पहिले तो तब,

अब जिय जारत, कहौ धौं कौन न्याय है।

सुनी है कै नाहीं, यह प्रकट कहाबति जू,

काहू कलपाय है, सु कैसैं कल पाय है॥

8. बड़े बड़ेन की ऐसि ही, बड़ेन बड़ाई होय।

हनूमान जब गिरि धरेउ, गिरिधर कहत न कोय॥

गिरिधर कहत न कोय ताको किनका हरि धरेऊ।

गिरिधर गिरिधर होय कहत सबको दुख हरेऊ॥

कह गिरिधर कविराय सुनो हो ज्ञानी भाई।

थोरे में यश होय यशी पुरुषन को साँई॥

खण्ड–स

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

9. ''पद्माकर का काव्य भक्ति, शृंगार और वीर रस का सुन्दर संगम प्रस्तुत करता है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

10. नीति काव्य की दृष्टि से गिरधर कविराय का मूल्यांकन कीजिए।

11. 'रीतिकाल' के नामकरण के संबंध में विविध विद्वानों के मतों की समीक्षा करते हुए रीतिकाल की त्रुटियों पर प्रकाश डालिए।

12. काव्य-हेतु से क्या तात्पर्य है ? काव्य-हेतु कौन-कौनसे हैं ? स्पष्ट कीजिए।